IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्त्री-स्वरकेँ जगजियार करैत 'काँचहि बाँस'

प्रियंका कुमारी (जे. आर. एफ.)
शोधार्थी
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ल० ना० मि० वि०, कामेश्वरनगर, दरभंगा

सारांश :-

एहि शोध आलेखक अंतर्गत उषाकिरण खानक कथाक मूल्यांकन कएल गेल अछि। उषाकिरण खानक लगभग सभटा कथा 'काँचहि बाँस' मे संकलित अछि। अपन साहित्यक द्वारा स्त्रीक संघर्ष, पीड़ा, शारीरिक-मानसिक प्रताड़ना ओ स्वतंत्र अस्तित्वक आवश्यकताकेँ प्रभावी रूपेँ प्रस्तुत कएलनि। कथाक प्रासंगिकता वर्तमानमे सेहो अछि। एहिमे स्त्रीक वैवाहिक स्थिति ओ विधवाक संघर्ष ओकर जीवनक त्रासदीक वर्णन कएल गेल अछि। हिनक कथाक अंतर्गत आएल स्त्री स्वरकेँ एहि शोध आलेखमे प्रस्तुत करबाक प्रयत्न कएल गेल अछि।

बीज-शब्द :- स्त्री विमर्श, विवाहक विरोध, विधवा, पर्यावरण, शसक्त मनोभाव

प्रस्तावना:-

"उषा प्रसर मे शरद ऋतुक धनहर परिसर सन

किरण-रत्न विकिरण करइत प्रभुदित दिनकर सन

खान स्वयं मिथिलाक सकल संस्कारक अपने

मैथिलीक कोरक छी फुल गुलाबक अपने"[1]

उर्पयुक्त पद डॉ० उषाकिरण खानक परिचयमे भीमनाथ झा अपन कविता माध्यमे लिखने छथि।

2015 मे भारत सरकार द्वारा पद्मश्रीसँ अलंकृत आ 2010 मे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित हिन्दी आ मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध लेखिका उषाकिरण खानक कथा-संग्रह "काँचहि बाँस" मे कुल 23टा छोट-छोट कथा अछि जे शेखर प्रकाशनसँ 2016 मे प्रकाशित भेल अछि।

हिनक कथामे स्त्रीक संघर्ष, स्वावलम्बनसँ अर्जित सामाजिक प्रतिष्ठा अभिव्यक्त भेल अछि। कथामे समकालिन सामाजिक परिघटना, आर्थिक विपन्नता ओ राजनीतिक विलक्षणकेँ सारगर्भित रूपेँ दर्शाओल गेल अछि। एखनो स्त्रीक विवाहकेँ लऽ कऽ विवाद बहुत रास परिवारमे देखल जाइत अछि। आधुनिकताक एहि युगमे स्त्री वा पुरुषकेँ विवाहसँ अधिक अपन आजीविका पर ध्यान केंद्रित रहैत अछि, मुदा पुरान विचारधाराक समर्थन कएनिहार

सभ अपन बेटा-बेटीकेँ शीघ्र अति शीघ्र विवाह करबामे विश्वास रखैत छथि। स्त्रीक संदर्भमे ई आओर अधिक प्रचलित अछि। मुदा आजुक स्त्रीसभ एकर विरोध करैत सेहो नजरि अबैत छथि।

"देखियौ सीरपुरक कतेक ब्राह्मणी पैंतीस वर्षक भऽ गेलैक अछि। रामनगरक गोआरि गोर दसेक बियाहल तँ छैक मुदा जैतुकक वास्ते गौना नहि भऽ रहल छैक। बुधनगराक कएक टा रजिपुतनी आ कैथिन कुमारि, परिव्यक्ता आ विधवा अछि। ककरो कोनो काज रोजगार नहि छैक, ओ लोकनि अन्न- वस्त्र लय कलपै छै। अहाँ ओकरा सभ लए किएक ने कोनो इन्तजाम करै छियै?"[2]

एहि कथा-संग्रहमे देखाओल गेल अछि राजनीतिक लाभक लेल सन्तानोक सौदा कऽ लोक आगू बढ़य चाहैत अछि।- "बाबूजी, अहाँ हमरा दिक् नइं करू। हम अहाँकेँ आ अहाँक प्रलोभन केँ चिन्है छी। हमरा चुप्पे रह' दिय ' नहि तँ गामे- गाम अहाँक पसारि देब। अहाँ पर कहियो हम भार नहि छलहुँ ने"[3]

नायिका अपन विवाहक विरोध तँ करिते छथि संगहि पुरुषवादी अहंकार पर चोट सेहो करैत अछि। अपन पिताकेँ उचित- अनुचित बात सेहो बुझबैत अछि। कथाक पात्र साहसी अछि।ओ अपन जीवनक महत्वपूर्ण फैसला लेबामे स्वयं सक्षम अछि। अपन अधिकार बुझैत अछि। जावत नारीमे अपन निर्णय स्वयं लेबाक क्षमता नहि होयत, सुरक्षा लेबाक बदला स्वरक्षा नहि कऽ सकतीह, आर्थिक रूपसँ स्वतंत्र नहि हेतीह, तावत नारी सशक्त बनि अपन अस्तित्वकेँ नहि चिन्ह सकतीह। स्त्री अपन समस्त पुरान सम्बोधन आ परिचयकेँ मेटा एकटा नव अस्तित्व आ अस्मिता स्वयं गढ़ि रहल अछि, पुरुषक सत्ताकेँ बेर-बेर चुनौती दऽ रहल अछि। कहल गेल अछि "नारी मुक्ति बिना क्रान्ति नहि , क्रान्ति बिना नारी मुक्ति नहि।"

प्रत्येक रचनाकारक अपन एक विशिष्ट सोच होइत छैक। उषाकिरण खानक कथा सभ भारतीय समाज खास कऽ मिथिला समाजमे पितृसत्तात्मक व्यवस्थाक विरोध स्पष्ट रूपमे भेल अछि। समाजमे जतेक विधवा स्त्री पीड़ित छथि ओतेक आर किओ नहि । विधवाक लेल कानून तँ आजादीक कालसँ अछि मुदा एकर परिणति एखनो समाजमे नगण्य अछि । समाजसँ पहिने परिवार ओकरासँ पक्षपात करए लगैत अछि । परिवारक सदस्य लेल ओ किछु नहि रहि पबैत अछि। हुनक हँसब- बाजब, खाएब पीब, सभ चीज पर रोक लगा देल जाइत अछि। "गोर पचासे मोनक धानक ढेरी रहैक पछिला आँगनमे । मैंयाँ आधा सेर ताहिमेसँ उठा नेने रहथिन। तखनहि छोटका दिअर कोम्हर दनसँ आबि जुमलखिन। बिखिन - बिखिन गारि पढ़लखिन आ लाते - लात ओधबाध कय देलखिन। धानक ढेरी लग मृतप्राय पड़लि रहलखिन बड़ी काल धरी ।"[4]

विधवाक इच्छाकेँ परिवारमे कोनो मोजर नहि भेटैत अछि एतए धरि जे ओ अपन इच्छानुसार भोजनो नहि कऽ सकैत अछि । शारीरिक आ मानसिक रूपसँ ओ सदिखन अपनाकेँ असगर पबैत अछि, ऊपरसँ पारिवारिक यंत्रणा वैधव्य जीवनकेँ त्रासदीसँ भरि दैत अछि। नोचनी मैंया नियतिक क्रूर हाथक कठपुतली बनि स्वयंकेँ भगवान भरोसे छोड़ दैत छथि। परिवारक उलाहना सुनब हुनक नियति बन जायत अछि। विधवा स्त्री खाहे बहू हो, खाहे सास हो, खाहे गरीब हो, खाहे अमीर हो, खाहे सवर्ण जातिक हो, खाहे पिछड़ी जातिक हो, विधवा भेलाक बाद परिवार द्वारा ओकरा बोझे बुझल जाएत अछि आ ओ घरेलू हिंसाक शिकार होएत अछि। परिवारक दृष्टिकोण हुनका प्रति खराप रहैत अछि ।समाजक व्यवहार विधवाक प्रति सकारात्मक बहुत कमे रहैत अछि । लेखिका एहि परिवारिक मतभेदकेँ सुक्ष्मतासँ चित्रित केने छथि ।

"दिअर सभक गारि फज्झति आ टोकाटोकीक एकोरत्ती अधलाह नहि मानथि । केओ आन घरबैया जँ हुनकासँ हुनकर अइ दुरवस्थाक लेल सहानुभूति देखबनि तँ कनेको कान नहि देथिन । कहथिन –"जाए दै जाइयौ, जकरा जे भेटबाक छैक से भेटबे करतै आ जकरा नहि भोग छैक से नहिये भोगतै ।"[5]

जहिना विधवा एहि जगतमे उपेक्षित रहलीह ओहिना चिर काल धरि लोक वैश्विक स्तर पर पर्यावरण केँ दोहन - शोषण करैत रहल अछि । राज्य ओ देश विकासक नामपर पर्यावरणक क्षरण करैत रहल अछि जकर दुष्प्रभाव मनुक्ख पर सेहो पड़ल । तेजीसँ भऽ रहल शहरीकरण, औद्योगीकरण सँ पर्यावरण केँ कतेको प्रकारसँ नुकसान भऽ

रहल अछि । डैम आ पुल निर्माण कार्यमे पैघ रूपसँ वृक्षक कटाइ आ भूमिक अधिग्रहण होयत अछि जाहिसँ जलीय जीव आ पछीक प्राकृतिक आवास नष्ट भऽ जायत अछि । अपन कथाक माध्यमसँ लेखिका पाठकक ध्यान पर्यावरण दिस सहजतासँ आकृष्ट करौलनि–

"अएँ?"- ओत्तेक टा पहाड़ी गीरि गेलै बिल्डिंग, पुल आ डैम? गाछ- बिरिछ मन्दिर–गहवर, चिड़इ, चुनमुनी । धक्का लगलै तुलिका कैं । फोटोग्राफीक टीम उसाँस छोड़लकै ।" इएह होइ छै मैम, दिल्ली अरावली पर्वत श्रृंखला कैं हँसोथि सकै छै तँ बिहारक विकास काली पहाड़ी कैं किएक ने गीरि जेतैक?"[6]

जखन स्वयं मानवक अस्तित्व पर खतरा आबि गेल तखन मानव जाति पर्यावरणक महत्व कैं बुझल ओ विश्वमंचपर पर्यावरण संकटकैं उठाओल गेल । परिणामस्वरूप विकसित देश ओ विकासशील देश एहि पर्यावरण संरक्षणमे अपन-अपन सकारात्मक सहयोग करि रहल अछि ।

पर्यावरण आजुक संदर्भमे वैश्विक चिंतनक विषय अछि। जीव-जन्तु, गाछ-बिरिछ, हवा, पानि, प्रकाश आदि सभसँ पर्यावरणक निर्माण होइत अछि। साहित्य अदौसँ समाज आ ओकर चारू कातक परिवेशक वर्णन करैत आबि रहल अछि उषाकिरण खानक कथा सभमे सेहो पर्यावरणक प्रति प्रेम- सिनेहक अभिव्यकि भेल अछि। एहि कथा-संग्रहमे आएल पहिल कथाक शीर्षक अछि 'बड़क गाछ तर' जे अपन पर्यावरण प्रेमकैं स्पष्ट करैत अछि। कथाक प्रारम्भिकैं वाक्य अपन पर्यावरणकैं द्योतित करैत शुरू होयत अछि – "गाछ तरक गछुली सभ पियरा जाइत छैक। किएक ने। बड़ गाछक छाहरि जे सतत पढ़ैत छैक। विशाल वट वृक्ष कैं अपना अंकमे बहुत जीव- जन्तु सभकैं समेटि लेबाक क्षमता छैक। पंछी आ आन - आन जीव सभ ओतय रैन - बसेरा लैत अछि।"[7]

प्राकृतक गोदमे जतेक महत्व गाछक अछि ओतहि नदीक सेहो । मिथिला देश एखनो वर्षाक ऋतुमे बाढसँ पीड़ित अछि । प्रत्येक दू- चारि सालमे कोशी अपन मार्ग बदलि बाढ़क रूप ग्रहण कऽ लैत अछि जाहिसँ गामक-गाम एहि त्रासदीमे विलीन भऽ जाएत अछि । एक दिश ओ कोशीक हाहाकार आ ओहिसँ जनजीवनक अस्तव्यस्तताकैं रेखांकित कयलनि तँ दोसर दिश एकरहि समानान्तर ओ ओहि बाढ़िसँ धरतीमे अबैत सोना रूपी पाँकक चर्च करैत छथि। एहि क्रममे ओ मिथिलाक खेती-पथारी आ एकर जल-थलक चर्चा सेहो केने छथि ।

"कोशी मैयाक कृपा । चारि बरिस दुःख तँ आठ बरिस सुख । धरतीकैं सोना पिया दैत छथिन। आब फेर वैह सोनाखण्ड धरती । लोक सभ घुरि आयल। पतझाड़क बाद आयल कोपड़ जकाँ गाम महमहाइत अछि ।"[8]

उषाजीक कथाक विषय-वस्तु अति सहज ओ उद्देसात्मक रहैत अछि जे पाठककैं माथमे एक नव तरंग उत्पन्न कऽ दैत अछि । मनक विचार ओ आत्मविश्वास जतेक निर्बल रहैत अछि लोक ओतेक कमजोर ओ निस्सहाय रहैत अछि तथा मनःस्थिति जतेक मजगुत रहैत अछि ओ ओतेक स्वच्छन्द आओर आत्मविश्वाससँ भरल एवं स्वतंत्र जीवन व्यतीत करैत अछि । एकरा ऊपर कोनो प्रकारक दबाव नहि रहैत अछि । मस्तिष्क कारणेँ मनुक्ख आन जीवसँ उत्तम अछि । एहिमे उठैत दृढ़ ओ कमजोर विचार मानवकैं सबल ओ निर्बल बनबैत अछि । एहन कठिन विषयकैं अति सरलतासँ अपन कथाक माध्यमसँ पाठकक समक्ष रखने छथि । मनोविश्लेषणात्मक ई कथा पाठकमे सकरात्मक ऊर्जाकैं प्रवाह बढ़ा देत –

"बाइस वर्षक विजया अनायास साकांक्ष माए भए गेल । जे दशा हमर भेल से हम अपना बेटी सभक नहि होमए देबैक । हमर जीवन एक टा गून टूटल नाह जकाँ एमहर ओम्हर टौआएल घुरल अछि, आब एकरा सभकैं नहि बौआए देबैक ।"[9]

मनोभाव जतेक सशक्त रहब आवश्यक अछि ओतेक तार्किक ओ गंभीर रहब। अपन कोनो निर्णय सुनिश्चित करबाक काल ओकरा पर नीकसँ तार्किक रूपेँ विचार नहि कएला पर परिणाम मनोनुकूल नहि भऽ भयावह रूप सेहो लऽ सकैत अछि । मानल जाइत अछि जे नव पीढ़ी अपन पुरान पीढ़ीसँ अधिक तर्कशील रहैत अछि । वर्त्तमानमे नव पीढ़ी तार्किक तँ भेल मुदा ओकरामे कोनो काज करबाक अतिरिक्त बेचैनी रहैत अछि । ओ ओकर परिणाम पर कनेको विचार नहि करैत अछि । अपन पुरान पीढ़ीसँ ई नव पीढ़ीकैं सिखबाक आवश्यक अछि जे कोनो कार्यमे अगुताएब नीक नहि । कथामे एकरा नीक जकाँ प्रस्तुत कएल गेल अछि जे मानव मस्तिष्ककैं विचार करबापर विवश कऽ दैत अछि ।

" 'की कहब' ओइ सुमिरन दहियारक बेटा विजइया चम्पासँ बियाह करत । किसनौत मे की लड़िकाक अकाल भऽ गेल छै । सिनेमा बूझि लेलकै गाम कैं ?'

'हूँ-विलास बाबा मूड़ी नीचा कय क' विचारय लगलाह ।

'की । विचारै छह, बाप दुधीक दही बेचि गुजर करैत छैक आ बेटा गामे गाम कुमैटी बैसौने रहैत अछि । जाइ छियैक हम ओकर कपार.....।"[10]

आधुनिक युगक एहि कालमे समाज एखनो नारीक प्रति कुचेष्टा भाव रखने रहैत अछि । पुरुष प्रधान ओ पितृसत्तात्मक समाजमे नारीकैं विभिन्न प्रकारक प्रताड़ना सहए पड़ैत अछि । जन्मसँ अंत धरि ओकरा समाजमे मौन रहि सभ तरहेँक कष्ट सहयकैं शिक्षा देल जाइत अछि। स्वयं सुखसँ अधिक पिता, पति ओ संतानक सुखक प्रति ओकर परम कर्त्तव्य थिक, स्त्री एहि मनोभावमे अपन परिवारक समृद्धिक लेल सम्पूर्ण जीवन समर्पित कऽ दैत अछि । मुदा एकर प्रतिफल ओकरा बहुत ठाम उलहना आ भाँति- भाँति प्रकारसँ प्रताड़ना सहय पड़ैत अछि । एकर मूलमे मुख्यतः आर्थिक स्थिति आछि । स्त्री आरम्भसँ मानसिक रूपेँ मजबुत तँ बनाओल गेलीह मुदा ओकर आर्थिक रूपेँ सशक्त करबाक प्रति कमे लोक साकांक्ष भेलाह ।

एहने एकटा स्त्री छथि सुनरी बनियाइन जकर सुंदरताक आभा चौहदिश चमकय । ओकर माय स्टेशनपर झिल्ली कचरी बेचय छलीह । मधुबनीक मोसाहेबक नजरि ओहि सुनरीपर गड़ि गेल । अपन लहेरियासराय वाला कोठी ओकर नाम करि विवाह कऽ लेलक । एहिसँ पहिने मो साहेबक विवाह भेल छल, जकरासँ चारिटा संतान सेहो छल । मन भरलाक पश्चात मोसाहेब एहि सुनरीकैं ओकर हालपर छोड़ि देल । सुनरीकैं एहि जीवन क्रममे अपन कोनो प्रकारक नही सहमति छल आ नहि विरोध । मुदा तइयो समाज ओकरा निम्न स्तरक नजरिसँ देखैत छल । सुनरी जतेक शरीरिक रूपसँ सुनर छलीह ओतेक मानसिक रूपसँ शसक्त । जखन मोसाहेब सुनरीकैं ओकर हालपर छोड़ि दैत अछि तँ अपन जीविकोपार्जनक लेल ओ पुरना वृत्ति अपनाओल । जे कोनो मनुक्ख लेल अति आवश्यक अछि । मुदा ओ पति जे कैंचाक दंभपर विवाह केलक आ मन भरलाक पश्चात छोड़ि देलक, ओकरा समाजमे वैह सम्मानजनक स्थान बनल रहल आ सुनरी जे अपन सभ कर्त्तव्यक पालन करैत अछि लोकक दृष्टिमे निम्न भऽ जाइत छथि । पुरुष प्रधान समाजमे पुरुषक प्रति प्रश्न नहि उठैत अछि अपितु सभ तरहेँक संघर्ष केवल स्त्रीकैं करए पड़ैत अछि । मोसाहेब धनी व्यक्ति छलाह, एहिसँ अपन मनक सभ कुकृत करबाक पूर्णतः स्वतंत्र छलाह। मुदा सुनरी ओ ओकर छोटकी बहिन परिया ओकर कुकृत्यक भेंट चढ़ि गेलीह।

सुनरी मोसाहेबकैं सभकिछु मानि अंतधरि संग रहलीह । ओकर बिमारीक इलाज करोलीह ओ अन्त समयमे अपना खर्चपर काशी लऽ जा मोसाहेबकैं काशी लाभ करोलनि । एतेक कएलाक पश्चातो ओकर अपन बहिनक बेटा घर-संपतिपर कब्जा कऽ एकरा भीख माँगय पर विवश कऽ दैत अछि । सुनरी अपन वृद्धावस्थामे ओहि गाममे घर-घर भीख माँग जीवन यापन करैत अछि। ओकरा संग एतेक भेलाक पश्चातो ओ ककरो बेजाय नहि बाजय ओ जे जतए दैत ओहिमे संतुष्ट रहैत छथि । मुदा अंतिम धरि ओकर आँखिमे आशा रहैत अछि, सभकिछु ठिक होएबाक ।

एहने सन परिस्थिति 'सीमन्तिनी' शीर्षक कथा नायिका सेमियाक संग होइत अछि । पति जखन बहुत दिन भेलाक पश्चात घर नहि अबैत अछि तँ घरक स्थिति दिन-प्रतिदिन दयनीय होइत चलि गेल। आर्थिक रूपेँ विपन्न ओ मानसिक रूपेँ कमजोर रहबाक कारणेँ ओ अपन जीवनमे असहजता महसुस करए लगैत छथि ओ अन्ततः मानसिक रूपेँ विचलित भऽ बताहि भऽ जाइत छथि।

स्त्री जखन स्वावलंबी छलीह तँ सभ प्रकारक यातना सहए अपन जीवन आत्मविश्वाससँ बितौलीह मुदा आर्थिक एवं मानसिक रूपेँ कमजोर रहबाक कारणेँ एक स्त्री जीवनसँ टूटि गेलीह ओ बताहि भऽ गेलीह तँ दोसर अपन शसक्त मनोबलसँ आश लगौने रहलीह। स्थिति दुनूक अत्यंत दयनीय तऽ भेल। मुदा सामाजिक ताना- बानाकैं सहैत जे जीवन-यापन कएलीह ओ उतार-चढ़ावकैं संभालि नहि सकलीह । उषा जीक ई दुनू कथा समाजमे स्त्रीक स्थितिकैं नीक रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि ।

भारतीय समाजमे जमीदारी व्यवस्था एक रोग जेहन छल। एकर अंतर्गत जतेक गरीब रहैत छल, सभपर अत्याचार दिनानुदिन बढ़तहि जाइत छल । कोनो गरीब परिवारमे एकर सभसँ पैघ ओ सौम्य ध्येय स्त्री होइत छलीह। भारतीय समाजमे मुख्यतः स्त्रीकेँ अपन घरक लाज मानल जाइत अछि। जमींदार, अत्याचारी, अभद्र लोकनिक लेल कोनो गरीबक स्त्री आसान लक्ष्य होइत छल। एहिक कारण अधिक लोक शहरमे कमाय तऽ गेल मुदा गाम दिस घुरि कऽ नहि आएल। परिवारक स्त्रीक भय अत्यधिक छल। स्त्री घरसँ लऽ कऽ बाहर धरि प्रताडित होइत रहलीह। जतय घरसँ बाहर कुदृष्टि रूपेँ तकैत अभद्र लोकनिक भय ओतहि घरमे पति नशा करैत अछि तँ ओकर गारि- मारिक भय ।

कथा लेखिका अपन कथामे साम्य रूपेँ स्त्रीक लगभग बहुतो समस्यापर चर्च केने छथि। कथा यथार्थक प्रतिमान थिक। एक दिश बाहरमे अपन प्राणक रक्षा करैत स्त्री गाम धरि छोड़ि दैत अछि-

“आइ काल्हि गामक हवा खराब भऽ गेल छै। बड़का- बड़का मोंछ बला ठिकेदार सभ मर्राइत रहै छै हमरा बड़ डर होइए।”[11]

तँ दोसर दिश अपनहि घरमे पतिक क्रोध ओ आवेशमे नित्य स्त्री मारि खाइत रहैत अछि। विरोधक स्वर समाजमे केओ सुननिहार नहि रहैत अछि। लोक घर- परिवारक मामिला बुझि अपन-अपन पल्ला झाड़ि लैत अछि। नशा ओ ऊपरसँ पितृसत्तात्मक विचार स्त्रीकेँ वैश्यावृत्तिक बाजारमे सेहो धकेल दैत अछि।

“ओ जे घरबलाकेँ हेतु कुहेतु बुझबै छै तँ गत्र-गत्र दागि दै छै आ जँ चुप रहै छै तँ एकटा नवागन्तुकक सनेस साँठि दै छै।”[12]

“गए दाइ, एकर बियाह भेल छै ने भौजी?”

हँ हय, भेल छलै मुदा एक दिन बहु कोन्नेदुन बिला गेलै। लोक कहइ छइ ई बेच लेलकै।”[13]

स्त्रीकेँ भोगक वस्तु मात्र बुझल गेल। परिवार अपन जान झुड़ेबाक लेल एक समयमे वृद्ध वरसँ विवाह सेहो कऽ दैत छल, जकर मूल छल धनक लोभ । मुदा एहि समाजमे रहय वाली स्त्री अपन हक ओ अधिकारक लेल अपन परिवार ओ समाजसँ लड़बाक लेल तैयार रहैत अछि। ओ सासुरसँ पड़ा कऽ चलि अबैत अछि आओर नैहरमे एक छोट सन झोपड़ीमे जीवन-यापन करैत अछि।

“जो अपना घर, तोरे नाहित हम नहि बुढ़बा तर बसबौ आ घोघतर सँ सांप मारबौ ।”[14]

सामाजिक ठाँचा एहन बनल अछि जतय स्त्रीकेँ जन्म लेबासँ लऽ कऽ मृत्यु पर्यन्त धरि प्रताड़ना सहए पड़ैत आबि रहल अछि। वर्त्तमानमे स्त्रीक दशामे सुधारतँ भेल अछि मुदा रूढ़िवादी विचारधाराक लोक एखनो समाजमे स्त्रीकेँ वस्तु मात्र बुझि ओकर शोषण करबामे कोनो प्रयत्न नहि छोड़ैत अछि। आइ गाम-गाममे लोक अपन बेटीकेँ प्राथमिक ओ माध्यमिक वर्गक शिक्षा दऽ दैत अछि मुदा जखन उच्च स्तरीय शिक्षाक समय अबैत अछि तँ ओकरा शिक्षापर रोक लगा देल जाइत अछि। एहन स्थिति अधिकांश ग्रामीण समाजक मध्य देखल जाइत अछि। वैश्वीकरणक एहि युगमे स्त्री अपन अधिकारक लेल स्वयं मंचपर चढ़ि अपन आक्रोश व्यक्त करैत अछि। स्त्री पुरुष एक संग, एक मंचपर काज करए एकरा लेल सभ तरहेँ सरकारी तंत्र कार्यरत रहैत अछि। वर्तमानमे शिक्षित स्त्रीक संख्या तँ बढ़ल मुदा घरेलु हिंसा एखनो अखबारमे देखबामे आबि जाइत अछि। उषाकिरण खान अपन कथा माध्यमसँ स्त्रीक पीड़ाकेँ, संघर्षकेँ सहज शब्दमे पाठक मध्य रखने छथि।

निष्कर्ष :-

रचनाकार जीवनसँ आ समाजसँ वस्तु ग्रहण करैत छथि। उषा किरण खानक कथा संग्रह "काँचहि बाँस" मिथिलाक समाजक स्त्रीक स्थिति, हुनक इच्छा आ संघर्षकेँ मार्मिक रूपमे चित्रण भेल अछि। एहिमे स्त्रीक आंतरिक पीड़ा वा स्वतंत्रताक आकांक्षा प्रभावशाली ढंगसँ प्रस्तुत भेल अछि।श्रमशील नारीक आत्मविश्वास भरल रहैत अछि। स्त्री पात्र सशक्त रूपमे आयल अछि। एकर अतिरिक्त कथा सभ मिथिलाक समकालीन मुद्दाकेँ सेहो उजागर करैत अछि। कथामे मनोविश्लेषणात्मक सूक्ष्म चेतनाक उजियार भेल अछि। अपन कथाक वातावरणमे पर्यावरणकेँ संरक्षणक आवश्यकता अति सुगमता सँ चित्रित केने छथि। हिनक ई कथा संग्रह गागरमे सागरक कार्य करैत अछि किएक तँ एहिमे लेखिका मनुष्यक मनःस्थितिसँ लऽ कँ, पर्यावरण, जीव-जन्तु, नदी, बाढ़, कृषि आदि अनेको विषयकेँ समाहित केने छथि। हिनक भाषाक ठाठ आ कथाक प्रवाह पाठकमे उत्सुकता आ अभिरूचि बनौने रखैत अछि।

संदर्भ ग्रंथक सूची: -

1. झा भीमनाथ, सांध्य गोष्ठी, नवम्बर 2020
2. खान उषाकिरण, काँचहि बाँस, शेखर प्रकाशन, पटना, 2016, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ 103
3. वएह, पृष्ठ – 104
4. वएह,पृष्ठ - 87
5. वएह, पृष्ठ – 88
6. वएह, पृष्ठ- 110
7. वएह, पृष्ठ – 5
8. वएह, पृष्ठ – 28
9. वएह, पृष्ठ – 96
10. वएह पृष्ठ – 77
11. वएह, पृष्ठ- 43
12. वएह, पृष्ठ- 36
13. वएह, पृष्ठ- 41
14. वएह, पृष्ठ- 29